P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-6* September- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय परिवेश में फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

विजय लक्ष्मी मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर,
एम0एड0 विभाग,
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी0 जी0 कॉलेज,
गोरखपुर

सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में फ्राबेल का योगदान अविस्मरणीय है। फ्रोबेल एक ऐसे शिक्षा शास्त्री हैं जिसने छोटी आयु के बच्चों के शिक्षा की एक व्यवहारिक योजना का सूत्रपात किया। इनका जन्म जर्मनी में 21 अप्रैल 1782 ई0 में हुआ। प्रकृतिप्रेमी होने के कारण इनका अध्ययन में रुचि नहीं थी। इनकी रचनाओं में–(1826) 'एजुकेशन आफ मैन'–(ii) (1802) 'दि पेडागाजिक्स आफ दि किंडर गार्टन'– (iii) (1899) 'एजुकेशन वाई डेवलपमेंट–(iv) (1853) 'मदर प्ले एण्ड नर्सरी साँग्स– (v) (1899) ' फ्रेडरिक फ्रोबेल की आत्मकथा थी।

किण्डरगार्टन पद्धति विद्यालय की स्थापना की। 1853 में इनकी मृत्यु हो गयी। फ्रोबेल आध्यात्मिक आदर्शवादी थे । उनका मत था कि समस्त विश्व में ईश्वर की सत्ता विद्यमान है जीवन विकास की एक निरन्तर प्रकिया है। शैक्षिक विचारों में, उनके अनुसार बालक में अपने पूर्ण विकास की सम्भवनायें नीहित हैं। शिक्षक का कार्य केवल मार्ग दर्शन करना है। शिक्षा का उद्देश्य–बालक अनपे आपको ,प्रकृति को तथा ईश्वर को पहचान सके।शिक्षण विधि में–आत्मक्रिया का सिद्धान्त,स्वतन्त्रता का सिद्धान्त,खेल विधि की शिक्षा एवं सामाजिकता का सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। उन्होने छोटे बच्चों के लिये किडरगार्टेन पद्धति का प्रतिपादन किया। आज बच्चों की शिक्षा में खेल के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है। इसके द्वारा रचनात्मक कार्य करने पर बल दिया गया है। फ्रोबेल ने शिक्षा के क्षेत्र में महान व्यवहारिक परिवर्तन किया।

मुख्य शब्द : फ्रेडरिक अल्फ्रेड, शिक्षा–दर्शन, प्रासंगिकता ।

प्रस्तावना

खेल पद्धति के प्रणेता एवं शिशु–शिक्षा को जन्म देने वाले विचारशील सुविख्यात दार्शनिक फ्रेडरिक फ्रोबेल का जन्म 21 अप्रैल 1782 ई0 में जर्मनी के थुरिन्सियन के ओवरबीच्स वाक नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम ल्यूथरी था। जब फ्रेडरिक फ्रोबेल मात्र 9 माह के ही थे तभी उनकी जन्मदात्री माँ का देहान्त हो गया। फ्रेडरिक फ्रोबेल की सौतेली माँ अपने ही बच्चों के लाड–दुलार में मग्न रहती थी। परिणाम यह हुआ कि फ्रेडरिक फ्रोबेल स्वयं अपने ही घर में उपेक्षित रह गये।

स्नेह के अभाव में वह बहुत ही चिन्तनशील, उदास एवं भावुक बन गये। इस चिन्तनशीलता, एवं भावुकता ने फ्रेडरिक फ्रोबेल की प्रकृति प्रेम की ओर झुका दिया। इससे फ्रेडरिक फ्रोबेल के मन में एक विचित्र रहस्य की भावना और सारे विश्व की परस्पर अप्रत्यक्ष तथा अंखड अभिन्नता के लिए खोज की प्रवृत्ति जाग उठी और उन्होंने अनुभव किया की सब वस्तुओं में एक विचित्र प्रकार का ऐसा सम्बन्ध है जिससे ज्ञात होता है कि प्रकृति के सभी पदार्थ एक दूसरे से सम्बद्ध है और सब में एक व्यापक अभिन्नता और आत्मीयता विद्यमान है।

रचनाएँ

1. (1826) 'एजुकेशन आफ मैन'
2. (1802) 'दि पेडागाजिक्स आफ दिकिंडर गार्टन'
3. (1899) 'एजुकेशन वाई डेवलपमेंट
4. (1853) 'मदर प्ले एण्ड नर्सरी साँग्स
5. (1899) ' फ्रेडरिक फ्रोबेल की आत्मकथा

सहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध लेख से सम्बन्धित अनेक शोध प्रबन्धों के अध्ययन की समीक्षा भी की जो निम्नलिखित है –

ब्रेन्डा सेल्गर्स (1996), 'अ रिव्यू ऑफ दि रिसर्च एण्ड लिट्रेचर ऑन इमरजेन्ट लिट्रेसी ऑफ फ्रेडरिक फ्रोबेल' पर शोध में ज्ञात है, कि बालको के शिक्षा के पूर्व माता–पिता की भूमिका तथा बालकों की प्रारम्भिक शिक्षा के उद्देश्य जो वर्तमान समय में प्रांसगिक है।

एडगिने (2009), नें शिक्षा पर अपने अध्ययन में पाया है कि फ्रेडरिक फ्रोबेल ने अपनी दार्शनिक विचार में बताया है कि ये सृष्टि दैवीशक्ति की स्वर्गीय एकता से युक्त है। इस एकता के कुछ सिद्वान्त है जिसमें सभी पदार्थों को स्थायित्व की प्राप्ति होती है। जो इस एकता का ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह सभी चीजो में निहित ईश्वर की शक्ति की अनुभूति कर लेता है।

अस्थाना (1974), 'ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द एजूकेशनल फिलॉसफी ऑफ फ्रेडरिक फ्रोबेल पर शोंध में ज्ञात किया है कि फ्रेडरिक फ्रोबेल ने शिशु शिक्षा के विविध पक्षों पर अपना विचार दिया है, विशेषकर खेल विधि द्वारा बच्चों की शिक्षा पर दिये गये सिद्वान्त वर्तमान में अत्यधिक प्रासंगिक है।

भरोटे (1992), इट्स इफेक्ट आन एजूकेशन इन द लाइट/ रिफरेन्स ऑफ द न्यू एजूकेशनल पॉलिसी पर शोध में शोधकर्ता ने फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों के प्रभाव के बारें में अध्ययन किया।

फ्रेडरिक फ्रोबेल के दार्शनिक सिद्धान्त

फ्रेडरिक फ्रोबेल के शिक्षा–सिद्धान्तों का आधार उनके दार्शनिक विचार है जो अनेक पूर्ववर्ती शिक्षाशास्त्रियों के विचारों से प्रभावित है –

1. उनके दार्शनिक सिद्धान्त गम्भीर धार्मिक आधार पर अवस्थित है क्योंकि उनके बाल्यकाल पर धार्मिक वातावरण का अधिक प्रभाव पडा था।
2. किशोरावस्था में उनका अधिकतर समय प्रकृति के ही सम्पर्क में ही बीता, परिणमस्वरूप वह प्रकृति से प्रभावित थे।
3. यद्यपि उनके सिद्धान्तों में पेस्टॉलाजी के विकास–क्रम और रूसो के प्रकृतिवाद के तत्व भी प्राप्त होते है तथापित वस्तुतः उन पर तत्कालीन आदर्शवादी दर्शन, कल्पनावादी आन्दोलन और वैज्ञानिक प्रवृत्ति का अधिक प्रभाव पड़ा था और जान पड़ता है कि जब वह जेना और बर्लिन में रहते थे उसी समय इन प्रवृत्तियों को उन्होने आत्मसात भी कर लिया।
4. कान्ट, फिश्टे, शेलिंग तथा हेगल प्रभृति दार्शनिकों का भी फ्रोबेल पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा।
5. फ्रेडरिक फ्रोबेल के काल में जर्मनी में दार्शनिक विचारधारा पर्याप्त बलवती थी।

हेगल, प्लेटो आदि आदर्शवादी दार्शनिकों के विचार से सृष्टि की उत्पत्ति शुद्ध रूप से विचारों से है और ये विचार ही शाश्वत है तथा सृष्टि के आधार हैं।

इसलिए सृष्टि का निर्माण मन और पदार्थ से ही हुआ है और एक परमेश्वर की आत्मा इन सब में व्याप्त है। इस प्रकार फ्रेडरिक फ्रोबेल ने अध्यात्मवाद से प्रभावित होकर एकता के नियम की प्रतिष्ठा की।

फ्रेडरिक फ्रोबेल की शैक्षिक विचारधारा

फ्रोबेल अपने विचारों को अधिक स्पष्ट करते हुए कहते है कि "शिक्षा विकास के माध्यम से मनुष्य के जीवन को इतना विशाल बना देती है कि उसका सम्बन्ध प्रकृति से स्थापित हो जाए और उसमें समाज तथा मानवता की उपेक्षाओं एवं इच्छाओं को समझने की शक्ति उत्पन्न हो जाए।" इस प्रकार फ्रोबेल ने यह सिद्ध किया है कि शिक्षा बालक के आन्तरिक आध्यात्मिक भावों का विकास करने में सहायक होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

फ्रोबेल आदर्शवादी थे अतः उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य है जीवन की पूर्णता प्राप्त कर मानव ईश्वर से अपना एकीकरण स्थापित कर ले एवं मोक्ष पद को प्राप्त हो जाय ।यही कारण था कि उसने अपने शिक्षायन्त्रों को संकेतात्मक बनाया है। वह चाहते थे कि शिक्षा का वातावरण आध्यात्मिक विकास के अनुकूल हो। रस्क ने फ्रेडरिक फ्रोबेल के शिक्षा उद्देश्यों का सारांश देते हुए कहा कि ''शिक्षा वह मनुष्य को इस प्रकार संवारती है कि उसकी आध्यात्मिक प्रकृति जागृत हो जाय''

1. शिक्षा व्यक्ति का उत्त्मा चरित्र और व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सके।
2. प्रकृति एवं वातरवरण से तादात्म्य कर सके।
3. मनुष्य, प्रकृति तथा ईश्वर के बीच एकता स्थापित हो सके।
4. बालक अपने अन्दर दैवी शक्ति का आभास कर सके।
5. बालक का आध्यात्मिक विकास हो सके।
6. बालक आत्मक्रिया द्वारा अपनी आन्तरिक शक्तियों का विकास एवं आत्मानुभूति कर सके।

शिक्षण विधि

फ्रोबेल ने शिक्षा जगत को सबसे नूतन एवं विशिष्ट विधि प्रदान किया है। यह विधि उनके द्वारा स्वयं बनायी गयी तथा प्रायोगिक रूप से अपनायी गयी व्यवहारिकता से ओत–प्रोत है। फ्रोबेल ने खेल को आधार बनाकर शिक्षा देने का समर्थन किया और बताया कि इससे बच्चे आनन्द एवं मनोरंजन का रसस्वादन करते हुए उन्मुक्त परिवेश में सीखकर अपने स्वाभाविक विकास की पृष्ठभूमि निर्मित करते है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल ने शिक्षण विधि में पेस्टालॉटसी, हरबार्ट, रूसो, आदि के विचारों को भी अपने विचारों के साथ समन्वित किया और शिक्षा क्रिया में खेल को केन्द्र बिन्दु बनाकर एक नवीन विधि प्रस्तुत की।

खेल विधि

खेल द्वारा शिक्षा देने के लिए वह सर्वप्रथम शिक्षाशास्त्री माने गये है। खेल में बालक की स्वाभाविक रूचि होती है और खेल में स्वतन्त्र अवसर पाकर वह अपनी प्रवृत्तियों को आसानी से प्रकट करता हैं। फ्रोबेल स्वयं कहते हैं, ''बाल्य अवस्था खेल की अवस्था है।'' इससे बालक का मनोरंजन होता है साथ ही उनकी शक्तियों का प्रयोग होता है।

पेस्टालॉटसी की भाँति फ्रोबेल ने भी 'क्रिया द्वारा सीखने'' पर बल दिया। फ्रेडरिक फ्रोबेल ने अमूर्त सीखने को बालकों की शिक्षा के उपयुक्त नहीं समझा। इसलिए उन्होने उपहारों का सृजन किया जिसकी सहायता से बालक अपने मन के भावों को व्यक्त करने के लिए स्वयं क्रिया करते है और सीखते है। किन्तु फ्रोबेल क्रिया का

लक्ष्य रचनात्मक रखने पर जोर देता है। उसके अपने शब्दों में "अपनी स्वतः प्रेरणाओं और भावनाओं को पूर्ण करने के लिए बालक स्वयं अपने मन से सक्रिय होकर कार्य करते है।"

स्वतन्त्रता

फ्रेडरिक फ्रोबेल के कार्य करते समय शिक्षक का हस्तक्षेप नहीं चाहता किन्तु फिर भी वह एक नियंत्रित स्वतन्त्रता का पोषक है। इस विषय में रस्क का विचार है कि "स्वतन्त्रता मूलरूप से नियमों के अनुपालन में निहित है, क्योंकि इसमें ही मनुष्य का सर्वोच्च स्वभाव परिलक्षित होता है।" इसीलिए उसने बालकों के खेल, उनकी अभिव्यक्त और स्वतन्त्रता शिक्षक के निर्देशन में रखने की सलाह दी।

सहयोग विधि

फ्रेडरिक फ्रोबेल के अनुसार घर तथा विद्यालय समाज के ही अंग है। यहाँ बालक को सहयोग के साथ कार्य करने का अवसर देना चाहिए। इससे बालक में मानवीय एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है तथा सामाजिक कार्यो में भाग लेकर वह अनुभव करता है कि मानवता एक है। इस प्रकार बालक के सामाजिक आत्मा की संतुष्टि के साथ ही साथ उसके व्यक्तित्व का सन्तुलित एवं पूर्ण विकास भी सम्भव है।

शैक्षिक पाठ्यक्रम

फ्रेडरिक फ्रोबेल ने बालक प्रधान पाठ्यक्रम प्रश्न दिया। उन्होने कहा कि पाठ्यक्रम की व्यवस्था बालक के विकास की अवस्था के आधार पर निश्चित होनी चाहिए। सर्वप्रथम तो बालक वस्तु को जाने, जब जानने योग्य हो जाये तो उसे स्वयं अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्ति का अभ्यास कराया जाये।

इस प्रवृत्ति का विकास हो जाने पर उसमें संकल्प–शक्ति का विकास करने का अभ्यास करना चाहिए। प्रतिदित दो एक घण्टे बालक खुद बनाने का अभ्यास करें। इससे उसको आत्मविश्वास के अनेक अवसर प्राप्त होगे। फ्रोबेल का विचार था कि मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले तथा विशेष–व्यवसाय एवं क्रिया–कलाप की शिक्षा के लिए मुख्य अनुभव के रूप में प्रस्तुत करने चाहिए जैसे भोजन–वस्त्र, गृह–सम्बन्धी अलंकरण उपभोग से सम्बन्धित सामग्री आदि।

ये बालक की रूचि के लिए उपयुक्त वातावरण उपस्थित करते है और उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रेरणा प्रदान करते है। इसलिए विद्यालय का पाठ्यक्रम इन्ही क्रियाओं पर आधारित होना चाहिए। उपयुक्त प्रवृत्तियों एवं रूचियों को ध्यान मे रखते हुए फ्रोबेल ने गणित, प्राकृतिक–विज्ञान, भाषा, कला, साहित्य, भूगोल, इतिहास आदि विषयों के अध्ययन को आवश्यक माना है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल पाठ्यक्रम के सभी विषयों में एकता का सम्बन्ध स्थापित करते है। उनका कथन है कि "जिस प्रकार एक वृक्ष की शाखाओं का एक वृक्ष से सम्बन्ध होता है उसी प्रकार ज्ञान के विभिन्न विषयों का एक (ज्ञान) से सम्बन्ध होता है।"

इसलिए पाठ्यक्रम के सभी विषयों में सह–सम्बन्ध होना चाहिए। बालक की अवस्था में वृद्धि के साथ–साथ पाठ्य विषयों क्रियाओं और तदनुरूप पाठ्यक्रम में वह परिवर्तन करते गये। संक्षेप मे फ्रोबेल द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रम का निम्न विशेषताएँ है।

1. पाठ्यक्रम के माध्यम से भी बालक प्रकृति के साथ एकता स्थापित करने का प्रयास करता है।
2. पाठ्यक्रम के सभी विषय एक ही लक्ष्य 'ज्ञान' की प्राप्ति में सहायक है।
3. बालक के आरम्भिक काल में खेल व संगीत को प्रधानता है।
4. पाठ्यक्रम निर्धारण में वह बालक की उत्पादक क्रियाओं का ध्यान रखता है, अतः धर्म, प्रकृति, विज्ञान भाषा, गणित और कला तथा बागवानी को भी पाठ्यवस्तु में सम्मिलित करता है।
5. बालक की विभिन्न अवस्थाओं के अनुकूल वह पाठ्यक्रम की व्यवस्था करता है जिसके विषय में फ्रोबेल का मत है कि –

(अ) बाल्यावस्था में 'खेल द्वारा' अभिव्यक्ति करने तथा निरीक्षण द्वारा वाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

(ब) जब बालक कुछ बड़ा हो जाये तो उसे जीवन तथ्यों को वास्तविक रूप से समझाने के लिए धर्म की शिक्षा दी जाये।

(स) ईश्वर ने अपनी अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है। अतः बालक को विज्ञान, प्रकृति–विज्ञान व गणित पढ़ाया जाये।

(द) भाषा–शिक्षण में गीत तथा कविता की प्रधानता हो।

शिक्षक और विद्यालय

फ्रेडरिक फ्रोबेल ने शिक्षक की कल्पना एक भाई, मित्र एवं पथ–प्रदर्शक के रूप में की है फ्रोबेल का मत है कि विद्यालय में शिक्षक का वही स्थान है जो बगीचे मे माली का होता है उसका कार्य बालकों के सामने एक ऐसा वातावरण प्रस्तुत करना है जिससे उनकी आन्तरिक शक्तियों का स्वतन्त्र विकास हो सके। फ्रेडरिक फ्रोबेल का विचार है कि– "तर्क युक्त, सचेत पथ प्रदर्शन के बिना बाल–क्रियायें जीवन के उन उपेक्षित कार्यो के लिए तैयार करने की अपेक्षा उद्देश्य विहीन खेल मात्र ही रह जाती है। नियमानुसार पथ–प्रदर्शन के बिना स्वतन्त्र विकास नहीं हो सकता है।"

विद्यालय के सम्बन्ध में भी फ्रोबेल का विचार है कि विद्यालय केवल ज्ञान ग्रहण करने का स्थान नहीं है बल्कि बाल उद्यान है। फ्रोबेल के अनुसार विद्यालय वह स्थान है जहाँ बालक यह सीखता है कि वह किस प्रकार समाज से सम्बन्धित है। फ्रोबेल ने विद्यालय की उपमा उद्यान से देते समय इस बात का संकेत किया है कि जिस प्रकार उद्यान में माली पेड पौधे, घास, कुंज आदि की देख रेख करता है, ताकि वहाँ आने वाले लोग मनोरंजन वातावरण का अनुभव करें, वह वातावरण जो उनके घर पर होती है। शुद्ध व शीतल वायु ,रमणीय सुखद स्थान और ध्यान को आकृष्ट करने वाला वातावरण उद्यान में ही मिलता है उसी प्रकार से विद्यालय का वातावरण भी इस प्रकार होना चाहिए कि घर की कमी यहाँ पूरी हो सके।

अनुशासन की अवधारणा

अध्यात्मवादी होने के कारण फ्रोबेल नैतिक शिक्षा के पक्षपाती थे। उनका मत था कि शिक्षा के द्वारा ही नैतिकता सम्भव है और इसी से ईश्वर की सत्ता का आभास तथा संसार की एकता का ज्ञान होता है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल आदर्शवादी थे। आदर्शवादी लोग कठोर अनुशासन में विश्वास करते है किन्तु फ्रोबेल बालक के प्रति सहानुभूति रखने के कारण अपने विद्यालयों में सहृदयता स्नेह एवं सहयोग के आधार पर अनुशासन स्थापित करने के पक्षपाती थे इनका विश्वास था कि बालकों को अच्छी प्रवृत्तियों के अभ्यास का अवसर मिलना चाहिए। यदि बुरी प्रवृत्तियों को उभरने का अवसर ही न दिया जायेगा तो बालक बुराई से बच जायेगें । वह डरा कर या दबाकर अनुशासन स्थापन मत का विरोध करता है वह अनुशासन पक्ष में है। उनका विश्वास था कि आत्मक्रिया और आत्मनियंत्रण अनुशासन स्थापन के सबसे उत्तम ढंग है।

शिक्षा के अन्य पक्षों पर विचार

शिक्षा में स्वतन्त्रता का महत्व

फ्रोबेल बालक से कहता है कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए बन्धनों एवं नियन्त्रणों से उसे विद्रोह करना चाहिए। वह स्वतंत्र, नियन्त्रण विहिनता तथा उन्मुक्त वातावरण का पक्षपाती था। उसने कहा सच्चे अर्थ में शिक्षा वही है जिसमें स्वतंत्रता हों। उसकी यह धारणा थी कि स्वतंत्र वातावरण में कार्य करने से ही बालक इच्छित रूचियों को प्रकट कर सकेगा और अपने भावी जीवन के लिए पथ का निर्माण कर सकेगा । फ्रोबेल इसलिए विद्यालय में बिना किसी हस्तक्षेप के बालक की शिक्षा की व्यवस्था करने पर बल देते है।

शिक्षा में परिवार का महत्व

फ्रोबेल ने भी पेस्टालॉट्सी के समान ही पारिवारिक शिक्षा के महत्व तथा परिवार एवं विद्यालय के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध को आवश्यक माना । उन्होने कहा है कि परिवार मानव उद्योगो का केन्द्र स्थल है। क्योंकि अच्छे परिवार में रहकर ही विशाल हृदय, विचारशील, मस्तिष्क विनम्रता आदि गुणों का प्रादुर्भाव सम्भव है। इसलिए वह कहते है कि गृहशिक्षा की व्यवस्थित शिक्षा माता–पिता करे। बालकों को गृहशिक्षा आवश्यक रूप से दी जानी चाहिए।

शैशवावस्था

एक से तीन की आयु तक बालक पूर्णतया माता–पिता पर आश्रित रहता है और वह वाह्य जगत का ज्ञान अपनी इन्द्रियों के द्वारा करता है। वह कहते है इस समय माताएँ बालकी उचित देख रेख करें ताकि उनमें कुसंस्कार न पैदा होने पाऐं।

बाल्यावस्था

फ्रोबेल के अनुसार शिशु की शिक्षा का आरम्भ यहीं से होता हैं। इस काल में बालक में असीम क्रियाशीलता होती है जिसके द्वारा वह आत्मभिव्यक्ति करता हैं। उस अवस्था में बालक निहित शक्तियों को बाहर निकालने का काम शिक्षकों को करना चाहिए। क्योंकि बालक 6 –7 वर्ष की अवस्था तक बोलना खेलना इन्द्रियों द्वारा अनुभव प्राप्त करना सीख लेता हैं। उसकी क्रियाओं में सर्वप्रमुख खेल ही होता है जिसमें वह अपार आनन्द का अनुभव करता है और अनेक सद्गुणों की प्राप्ती करता है अथवा कर सकता है। अध्यापक अपने कुशल नेतृत्व में विद्यार्थी की इस स्वभाविक प्रवृत्ति को उसी के लाभ के लिए प्रयोग में ला सकता है। इसी खेल को फ्रोबेल ने किंडरगार्टन ने नया मोड दिया।

पूर्व किशोरावस्था

इस समय बालक सीखता है और काम में भी आनन्द का अनुभव करता है। अब, शिक्षक के निर्देष बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इस समय कोई हस्तकला सिखनी चाहिए जिसमें शारीरिक श्रम हो। इनके अतिरिक्त इस अवस्था में कहानी सुनने, प्रकृति के सौन्दर्य की अनुभूति करने, मित्र बनाने की भी विशेष रूचि होती है। बालक में नैतिक तथा अन्य उत्तम गुणों का विकास भी इसी अवस्था में होता है। इसलिए फ्रोबेल धार्मिक शिक्षा, विज्ञान, गणित, भाषा, कला, इतिहास व भूगोल की संस्तुति करते हैं।

फ्रेडरिक फ्रोबेल की किंडरगार्डन (बालोद्यान) पद्धति

फ्रेडरिक फ्रोबेल जी ने ऐसे विद्यालय की योजना बनाई, जिसमें न तो पुस्तकें हों और न बँधे हुए बौद्विक पाठ ही हों प्रत्युत इनके बदलें जिसमें अद्यन्त खेल–कूद, स्वतन्त्र विचरण और उल्लास भरा हो। इस विद्यालय को उसने किंडरगार्टन (बालोद्यान या बच्चों की फुलवारी) की संज्ञा दी जिसमें बालक रूपी पौधा शिक्षक रूपी माली की देख–रेख में बढ़ता है। उन्होंने स्वयं अनेक खेलों की रचना की ।इन खेलों का उद्देश्य बालकों का शारीरिक विकास करना, प्राकृतिक वस्तुओं एवं वातावरण के सम्पर्क द्वारा उनकी आन्तरिक शक्तियों एवं प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना है जिससे कि समय आने पर वे अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का समुचित प्रयोग कर सकें जिससे उनकी जिज्ञासा एवं रूचि बनी रहे। इस पद्वति में फ्रोबेल ने बालकों को क्रियाशील बनाने तथा उनका उचित विकास करने के लिए उनकी आत्मभिव्यक्ति के लिए पाँच प्रकार के कार्य निर्धारित किए है–

1. कहानियाँ
2. मातृ–खेल एवं शिशु गीत
3. उपहार
4. कार्य तथा व्यापार

शिक्षा जगत में संभवतः फ्रेडरिक फ्रोबेल ही वह विचारक थे जिसने खेल की महत्ता प्रतिपादित करते हुये खेल आधारित ऐसी शिक्षण विधि का प्रतिपादन किया जो आत्म प्रेरित, आत्म नियंत्रित एवं स्वचालित तरीके से बालक के अन्तः जगत तथा बाह्य जगत में उदभुत तालमेल स्थापित करते हुये स्वतंत्रता, सामाजिक मूल्यो, जीवन मूल्यों तथा प्रतीकात्मक तत्थों की सम्पूर्ति करते हुये जीवन के स्वाभाविक एवं बहुमुखी विकास को मूर्त रूप देती है। फ्रेदरिक फ्रोबेल ने शिशु शिक्षा को महत्व दिया और दण्ड प्रणाली समाप्त करके विद्यालयो की नीरसता और शासन की कठोरता में सरसता लाकर भर दी । इनकी इस पध्दति का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि फ्रोबेल का मानना था कि खेल द्वारा जो कुछ बालक सीखते है वह उनके मानस – पटल पर अंकित होता है।

और बालकें को जो कुछ भी समझाया जाता है वह आसानी से समझ लेते है। फ्रोबेल की किंडरगार्टन पध्दति को आज सभी विद्यालयों में प्रयोग किया जाता है। उनकी खेल विधि की अत्यन्त महत्व दिया जा रहा है।

भारतीय परिवेश में फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

फ्रेडरिक फ्रोबेल की विचारधारा ने विवेकपूर्ण ढंग से शिक्षा देने, अध्यात्मिक प्रवृत्ति को अपनाने, बालकों की समस्या जनित शिक्षा पर बल देने आदि अनेक नवीन मान्यताओं को प्रस्तुत किया। जिसे सभी शिक्षाशास्त्री स्वीकार करते है। वास्तव में फ्रेडरिक फ्रोबेल का आधुनिक युग में महान विचारकों में अद्वितीय स्थान है, जिसने विश्वभर में शिक्षा के सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रभावित किया है। आधुनिक गतिशील शिक्षा का उन्हें अग्रदूत कहे तो अत्युक्ति न होगी। समस्त मानव समाज चिरकाल तक उनका ऋणी रहेगा।

यह बात सर्वमान्य है कि फ्रेडरिक फ्रोबेल ही प्रथम शिक्षाविद् थे जिसने शिशु–शिक्षा की ओर माता–पिता तथा शिक्षाविद् का ध्यान आकृष्ट किया।

भारतीय परिवेश में फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता निम्नलिखित रुप में दृष्टिगोचर होती है।

शिक्षा आत्म क्रिया के रूप में होती है, जिसके दो रूप है– आन्तरिक और बाह्य। फ्रेडरिक फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा अन्तर को बाह्य करने की एक प्रक्रिया है। आन्तरिक और बाह्य दोनो में क्रियात्मकता होती है। अन्दर से प्रेरणा होती है और बाहर क्रिया होती रहती है और अपनी अन्तःप्रेरणा से ही वह भाँति–भाँति के खेल खेलता है।

बालक अपनी स्वाभाविक क्रियाओं में बहुत रूचि लेता एवं आनन्द का अनुभव करता है। क्योंकि वे उनकी आन्तरिक भावना, इच्छा एवं प्रेरणा से सम्पन्न होते है। इसलिए फ्रेडरिक फ्रोबेल ने खेल को शिक्षा का आधार माना है। इन्होने खेल को आत्मदर्शन का प्रेरक माना है। फ्रेडरिक फ्रोबेल सदैव ऐसे अवसरों की खोज में रहते थे कि खेल द्वारा बालक में किस प्रकार ईश्वरीय तत्व को जागृत किया जाय।

वह यह भी कहते है कि बालक खेल से समय का दुरूपयोग नहीं वरन् सदुपयोग करता है। बालक के अन्दर छिपी हुई शक्तियाँ वास्तव में बालक की स्वाभाविक क्रियाशीलता है। यदि अध्यापक चाहे तो इन शक्तियों को, व्यवस्थित खेलों द्वारा विकसित कर सकता है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल का मत है कि जिस प्रकार बीज में निहित पूर्ण वृक्ष का विकास उचित वातावरण एवं भूमि में ही हो सकता है और उसकी देखरेख करना माली का काम है उसी प्रकार शिक्षा केवल उचित अवसरों की व्यवस्था करती है। फ्रोबेल कहते है कि प्रत्येक प्राणी में जन्म के समय उसके विकसित चरित्र की सुसम्बद्ध तथा संयुक्त योजना जन्म के समय विद्यमान रहती है यदि उनमें बाधा न दी जाए तो वह स्वतः विकसित हो जाती है। इस विकास को प्राप्त करने की उचित विधि का निर्देष करते हुए वह कहते हैं कि यह विकास अन्धानुकरण के बदले स्वाभाविक आत्मप्रेरित तथा स्वतः क्रिया द्वारा होना चाहिए।

अर्थात इस सिद्धान्त का यह तात्पर्य नहीं है कि अध्यापक या माता–पिता जैसा कहे, बताये या सुझाव दें। उनके अनुसार ही क्रिया की जाये। उसका अर्थ यह है कि ''अपनी स्वतः प्रेरणाओं और भावनाओं को पूर्ण करने के लिए बालक स्वयं अपने स्वतः प्रेरणाओं और भावनाओं को पूर्ण करने के लिए बालक स्वयं अपने मन से सक्रिय होकर काम करें।'' यदि वह सक्रिय होकर कार्य नहीं करेगा तो वह सीख नहीं सकता।

फ्रेडरिक फ्रोबेल ने आत्माभिव्यक्ति को जितना महत्वपूर्ण समझा है उससे कम महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष को नहीं समझा। उनका स्पष्ट मत है कि स्वतः क्रिया जो आत्मानुभूति या व्यक्ति निर्माण के विकास में सहायकता मिलती है वह सामाजिकता के द्वारा ही होनी चाहिए क्योंकि सामाजिकता ही मूल मानवीय प्रवृति है। इसलिए वास्तविक शिक्षा मनुष्यों में रह कर ही प्राप्त की जा सकती है। मनुष्य को पढ़–लिखकर उसी सामाजिक जीवन में प्रविष्ट होना पड़ेगा तथा उसे घर, विद्यालय, धर्मस्थान, व्यवसाय केन्द्र और राष्ट्र सभी से कुछ न कुछ काम पड़ेगा जिसके कुछ नियम और बन्धन उसे अपने जीवन में मानने ही पड़ेंगे। इसी प्रकार खेल–कूद की सामूहिक क्रियाओं द्वारा केवल उसे शारीरिक स्फूर्ति ही नहीं प्राप्त होगी वरन् बौद्धिक शिक्षा भी मिलेगी। अतः व्यक्ति समाज का अंग है और उसके कार्यों से सामाजिक जीवन पल्लवित होना चाहिए।

फ्रेडरिक फ्रोबेल बालक से कहते हैं कि ''स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए बन्धनों एवं नियन्त्रणों से विद्रोह करना चाहिए।'' वह स्वतन्त्र नियंत्रणविहिन तथा उन्मुक्त वातावरण के पक्षपाती थे। उन्होंने कहा ''सच्चे अर्थ में शिक्षा वही है जिसमें स्वतन्त्रता हो।'' उनकी यह धारणा थी कि स्वतन्त्र वातावरण में कार्य करने से ही बालक इच्छित रूचियों को प्रकट कर सकेगा और अपने भावी जीवन के लिए उचित पथ का निर्माण कर सकेगा। फ्रेडरिक फ्रोबेल इसलिए विद्यालय में बिना किसी हस्तक्षेप के बालक की शिक्षा की व्यवस्था करने पर बल देते हैं।

फ्रेडरिक फ्रोबेल के विचार मनोवैज्ञानिक ढंग के थे। जबकि वह मनोवैज्ञानिक नहीं थे। उन्होंने आजीवन शिशु के मनोविज्ञान का अध्ययन और मनन किया। बाल मनोविज्ञान की जो रूपरेखा उन्होनें चित्रित की आगे चलकर अन्य विद्वानों ने उसी में संशोधन एव परिवर्तन किया। यद्यपि फ्रेडरिक फ्रोबेल जीवन को एक इकाई मानते थे फिर भी उन्होंनें बालक के विकास में अवस्था के क्रम को स्वीकार करके उसके अवरूद्ध शिक्षा की व्यवस्था की किन्तु इन अवस्थाओं को उन्होंने उम्र के वर्गों के आधार पर नहीं वरन् इनका आधार पूर्ण रूप से मनोवैज्ञानिक बताया। शिक्षा को मनुष्य के विकास की अवस्थाओं के अनुसार नियोजित करना फ्रेडरिक फ्रोबेल की शिक्षा जगत को एक प्रमुख देन है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल ने परम्परा सम्मत आदर्शों को चुनौती देकर शिक्षा को वर्तमान भारतीय परिवेश की वास्तविकताओं के समक्ष उपस्थित करके विद्यालयों को रमणीय स्थलों के रूप में परिवर्तित कर दिया इन्होंने

शिक्षा प्रणाली में खेलों को प्रमुख स्थान देकर विद्यालयों में सरसता और उल्लास के वातावरण का सर्जन किया। फ्रेडरिक फ्रोबेल का मानना है कि रचनात्मक क्रियाओं द्वारा बालकों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल द्वारा प्रतिपादित ''किण्डरगार्टन'' प्रणाली अपने आप में अद्वितीय है। फ्रेडरिक फ्रोबेल की शिक्षा भारतीय परिवेश में प्रासंगिक है उनकी शिक्षा जगत में दी गयी देन को चिरकाल तक स्मरण किया जायेगा।

निष्कर्ष

फ्रेडरिक फ्रोबेल के आध्यात्मवादी अवधारणा से विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों का मत भिन्न ही रहा है परन्तु आज के भारतीय परिवेश में भी फ्रेडरिक फ्रोबेल प्रासंगिक है।

फ्रेडरिक फ्रोबेल के जीवन दर्शन तथा शिक्षा का शोध इतना व्यापक तथा गहन एवं सूक्ष्म है कि उस पर निर्धारित निष्कर्षों को सीमा में बाँधना सरल कार्य नहीं है फिर भी सीमाओं में रहते हुए जो कुछ विवेचन किया जा सकता है उसके आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

1. फ्रेडरिक फ्रोबेल ने अपनी शिक्षा व्यवस्था में छात्र की बाल्यावस्था को उसके जीवन विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना है तथा खेल को शिक्षा का आधार माना है। फ्रेडरिक फ्रोबेल जी ने खेल को बालक की स्वाभाविक क्रिया कहा है और शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण।
2. बच्चे हस्त–कार्यों एवं स्वानुभव द्वारा सीखें।
3. शिक्षा का प्रयोजन बालक को उसकी स्वाभाविक योग्यताओं के अनुकूल शिक्षण देना तथा शिक्षण के आधार खेल, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक है, और बालक सामाजिक गुणों से चरित्रवान बने।
4. फ्रेडरिक फ्रोबेल आदर्श–वादी थे परन्तु वह कठोर अनुशासन को नहीं स्वीकार करते थे वह बालक के प्रति सहानुभूति एवं विद्यालयों में सहृदयताा, स्नेह एवं सहयोग के आधार पर अनुशासन स्थापित रखने के पक्षपाती थे। फ्रोबेल का विश्वास था कि आत्मक्रियाः और आत्म नियंत्रण अनुशासन स्थापन के सबसे उच्च ढंग हैं।
5. जो सत्य है वही उपयोगी है तथा उपयोगी बात सत्य माना है।
6. फ्रेडरिक फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा वही है जिसमें स्वतन्त्रता हो।
7. फ्रेडरिक फ्रोबेल ने पाठ्यक्रम में भाषा साहित्य, हस्त कला तथा बागवानी, प्रकृति, धर्म तथा विज्ञान को रखने की बात की।

अतः परिणामों के आधार पर अत्यन्त ही स्पष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी की शिक्षा को चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में फ्रेडरिक फ्रोबेल के शिक्षा सम्बन्धी विचारों के अनुसरण करके विश्व परीकृष्ट के अनुरूप नये भारतीय समाज का निर्माण कर सकते है। आज की शिक्षा व्यवस्था निरूउद्देश्य हो गई है। उद्देश्यहीन शिक्षा व्यवस्था के अभाव में बालकों का सर्वागीण विकास सम्भव नहीं है। अतः भारतीय परिवेश में फ्रेडरिक फ्रोबेल के शैक्षिक उद्देश्यों को अपनाना आज की आवश्यकता बन गई है। आज शिक्षालयों में शिक्षकों की स्थिति बहुत खराब है। आज अध्यापकों में सेवाभाव का अभाव पाया जाता है अतः फ्रेडरिक फ्रोबेल द्वारा बताये गये आदर्शों की शिक्षकों को अधिक आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लाल , रमन बिहारी– शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त,रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ । (पृष्ठ संख्या– 355–371)
2. दूबे, डा0 सत्य नारायण –शिक्षा की नवीन दार्शनिक पृष्ठभूमि ,अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद। (पृष्ठ संख्या– 438–450)
3. पाण्डेय डा0 रामशकल–शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि,विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा (पृष्ठसंख्या–141–154)
4. टण्डन ,उमा –उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आलोक प्रकाशन लखनउ (पृष्ठ संख्या–277–284)
5. शील अवनीन्द्र – उभरते हुये भारतीय समाज में शिक्षक,साहित्य रत्नालय, कानपुर (पृष्ठ संख्या– 499–503)
6. सक्सेना , एन0आर0स्वरुप – उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ (पृष्ठ संख्या– 365–375)
7. चतुर्वेदी , शिखा माथुर, डा0 एस0एस0 – उभरते हुये भारतीय समाज में शिक्षक ,अग्रवाल पब्लिकेशन्स , आगरा। (पृष्ठ संख्या–231–241)